# अजायब बानी

मासिक पत्रिका

अक्टूबर–2020

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899, Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2018-2020
Published on 01 October 2020, Posted at RMS, Sri Ganganagar on 2nd or 3rd October 2020

मासिक पत्रिका

# अजायब बानी

वर्ष–अठारहवां | अंक–छठा | अक्टूबर–2020

4
**गुरु गुरु गुरु कर मन मोर**

5
**गुरु का अंदरूनी स्वरूप सबसे सुंदर होता है**

15
**कर्मों का जाल**

25
**आपके जीवन श्वासों का लुटेरा – 2**

33
**प्यार और तड़प के साथ गाएं**

34
**धन्य अजायब**

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** ने पोलिकम ऑफसेट, नारायणा, फेस–1, नई दिल्ली–110 028 से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।
99 50 55 66 71 80 79 08 46 01

विशेष सलाहकार – **गुरमेल सिंह नौरिया**
96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

उप संपादक – **नन्दनी**
सहयोग – **परमजीत सिंह, राजेश कुक्कड़**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 223 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

# गुरु गुरु गुरु कर मन मोर

गुरु गुरु गुरु कर मन मोर,
गुरु बिना मैं नाहीं होर x 2

1. गुरु की टेक रहो दिन-रात,
जांकी कोए ना मेटे दात x 2 — गुरु गुरु......

2. गुरु परमेश्वर एको जान,
जो तिस भावे सो परवान x 2 — गुरु गुरु......

3. गुरु चरनीं जां का मन लागै,
दुःख दर्द भरम तां का भागै x 2 — गुरु गुरु......

4. गुरु की सेवा पाऐ मान,
गुरु ऊपर सदा कुरबान x 2 — गुरु गुरु......

5. गुरु का दर्शन देख निहाल,
गुरु के सेवक की पूर्ण घाल x 2 — गुरु गुरु......

6. गुरु के सेवक को दुःख न व्यापै,
गुरु का सेवक दह दिस जापै x 2 — गुरु गुरु......

7. गुरु की महिमा कथन ना जाऐ,
पारब्रह्म गुरु रहा समाऐ, x 2 — गुरु गुरु......

8. कहो 'नानक' जां के पूरे भाग,
गुरु चरनी तां का मन लाग x 2 — गुरु गुरु......

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

11 जनवरी 1994

# गुरु का अंदरूनी स्वरुप सबसे सुंदर होता है

मुम्बई

परमात्मा सावन–कृपाल का धन्यवाद करते हैं जिन्होंने हमें अपना यश करने का मौका दिया है। प्यारेयो! सच्ची बात तो यह है कि गुरु की सिफत करने के लिए न जीभ हिलाने की जरुरत है, न होठ हिलाने की जरूरत है। हम गुरु की असली सिफत तभी कर सकते हैं जब हमारी यह अवस्था हो जाए कि जीभ हिलने से हट जाए, आँखें फड़कना बंद कर दे और सिमरन की तार गुरु के साथ जुड़ जाए। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

***आप छोड़ गुरु माहे समाहे।***

जब हम सिमरन के जरिए नौं द्वारे खाली करके अपने शरीर से ऊपर उठ जाते हैं तब हम अपने अंदर गुरु की मन मोहनी मूरत को प्रकट कर लेते हैं। वह मनमोहनी मूरत न किसी कैमरे में कैद की जा सकती है न

हम उसे किसी और यत्न से पकड़ सकते हैं। हम उस मन मोहनी मूरत को अपनी आत्मा के अंदर ही देख सकते हैं।

*सोहणे दी खातिर लक्खां लोग फकीर भये।*
*डेरे विच जंगला लाए सुक के मिसल हरीड़ भये।*
*सोहणे ने दर्शन नहीं दित्ता ते लक्खां दिल दलगीर भये।।*

गुरु का शब्द रूप नूरी स्वरूप है। जिन्होंने अंदर यह स्वरूप देखा है वे उसे सुंदर, प्यारा कहते हैं। उसमें से प्यार की किरणें निकलती हैं, नूर निकलता है। जो एक बार उसके नूरी स्वरूप का दर्शन कर लेता है उसकी निगाह में परियां भी तुच्छ हैं। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

*मेरे गुरु का कोई स्वरूप देखे हो जाए हूर परंदरी।*

जब परमात्मा कृपाल ने इस गरीब पर दया की, पहले ही दिन जब आँखें चार हुई तो उस नूरी स्वरूप की झलक दिखाई। मैंने लाधड़क होकर आपसे कहा, ''सच्चे पातशाह! जितने प्रेमी यहाँ बैठे हैं अगर आप इन्हें अपना यह नूरी स्वरूप दिखा दें तो क्या फर्क पड़ता है? अगर दुनिया आपके इस स्वरूप का दर्शन कर ले तो मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे या चर्च का कोई झगड़ा ही नहीं रहेगा। शंख बजाने वाला भाई, बांग देने वाला मुल्ला हैरान हो जाएगा कि हम तो यह सोचते थे शायद! परमात्मा बहरा है हम उसे शंख बजाकर, बाँग देकर या चर्च की घंटियाँ बजाकर उठाएंगे।''

वह परमात्मा तो मेरे अंदर है मेरी बारीक से बारीक आवाज को सुन रहा है और मेरी छोटी से छोटी हरकत को देख रहा है। सच्चे पातशाह ने हँसकर कहा, ''तू लोगों से मेरे कपड़े न फड़वा।''

कमल का फूल सूरज पर आशिक होता है, जब कमल का फूल सूरज को देखता है तो खिल जाता है। देखने वाले भी कमल का फूल देखकर खुश हो जाते हैं लेकिन जिसे गुरु के अंदरूनी स्वरूप की झलक मिल

जाती है वह कमल के फूल से भी करोड़ो दर्जे ज्यादा फूल जाता है। लोग उसे देखकर परेशान हो जाते हैं कि इसे क्या हो गया है?

मुझे मेरे भाई ने गुस्से में आकर कहा, ''तेरे ऊपर कृपाल ने जादू कर दिया है तुझे अमृतसर ले जाकर चेक करवा लाते हैं।'' मेरी हालत का तो मुझे ही पता है। मेरे भाई ने हुजूर से भी कहा, ''पता नहीं आपने मेरे भाई पर क्या किया है?'' मैं अपनी जिंदगी में अपने भाई से नाराज रहा कि इसने मेरे गुरु से इस किस्म के सवाल-जवाब क्यों किए? मैंने अपने विश्वास से कहा था कि वक्त आने पर यही तेरी संभाल करेंगे।

आमतौर पर मेरा भाई मुझे महन्त कहकर बुलाया करता था। हमारा मिलाप तो दस-बीस साल में ही कहीं होता था। उसने बीमार होकर अपने शरीर का त्याग नहीं किया था। वह बाहर से आते ही कहने लगा कि मुझे चार कसाईयों ने पकड़ लिया है लेकिन थोड़ी देर बाद ही कहने लगा कि महन्त के गुरु ने मुझे छुड़वा लिया है। उस समय हमारी रिश्तेदारी के बहुत सारे लोग उसके पास बैठे थे अगर उसे भी वह झलक मिली होती तो वह मुझसे यह क्यों कहता कि चल तुझे अमृतसर ले जाकर चैक करवा लाएं।

बेशक मेरे भाई को आखिरी वक्त नूरी स्वरूप की झलक मिली। अगर वह अपनी जिंदगी में पहले से अंदर जाता होता, उसने नाम लिया होता, वह उस झलक को देखता तो पता नहीं वह कितना भजन-सिमरन करके अपनी जिंदगी सुधार लेता। शरीर त्यागते समय वह अपने भाई और बच्चों को बहुत प्यार से कहकर गया कि सतसंग में जाना है, सेवा भी डालनी है। उसके बाद हमारे परिवार के लोगों ने नाम लेना शुरू किया। अब हमारे परिवार के लोग सतसंग में आते हैं, अपनी कमाई में से लंगर के लिए गेहूँ, आलू और सौंफ भी भेजते हैं; अब वे लंगर में काफी मदद करते हैं।

जिन प्रेमियों ने संगत के लिए पानी की सेवा की, चक्की पीसकर गुरु के लंगर के लिए आटा लाए। हर किस्म की कठिन मेहनत की उन्हें अंदर मन मोहनी शक्ल की झलक दिखाई देती है, वे उस झलक पर ही मस्ताने हुए फिरते है लेकिन हम उतनी देर ही बातें करते हैं जितनी देर हम मन के गुलाम हैं, इन्द्रियों के पंजे में फँसे हुए हैं कि गुरु से यह पूछेंगे वह बात करेंगे। जिनका अंदर तीसरे तिल पर ख्याल इकट्ठा होने लग जाता है उनके सारे सवाल खत्म हो जाते हैं, वे जब मुझसे मिलते हैं तो यही कहते हैं कि हम सिर्फ आपके दर्शनों के लिए ही आए हैं।

जो प्रेमी अहमदाबाद के ग्रुप में आए थे वे यहाँ भी हैं। जिस दिन सवाल-जवाब का समय था, उन प्रेमियों से पूछा कि आपका कोई सवाल है? उन प्रेमियों ने कहा कि बस! आप चुप करके हमारे सामने बैठे रहें, हम दर्शन कर लें। अब आप सोच सकते हैं कि वहाँ पर जो आत्माएं इकट्ठी हुई थी उन्हें कितना रस आया होगा, उन्होंने उस किरण को कितना देखा होगा? तभी वे चाहते थे कि हम चुप करके खामोशी से जिस्म से निकलती उन किरणों को देख सकें।

मैं महाराज सावन सिंह जी के मुत्तलिक बताया करता हूँ कि जिन पठानों के जरिए मुझे आपके बारे में पता चला था, वे दोनों पठान नामलेवा थे। वे पठान आपस में बातें कर रहे थे कि आप बहुत सुंदर है। आप सोच सकते हैं कि बाहर तो पाँच तत्वों का पुतला ही था। पता नहीं आप कितनों के नजदीक से गुजरे अगर सारे ही उस सुंदर स्वरूप की झलक प्राप्त कर लेते तो सारी दुनिया ही सिफत करने लग जाती।

***जाकी होय भावना जैसी, हरि मूरत देखी तिन तैसी।***

यह हमारे बर्तन का सवाल है। महाराज कृपाल कहा करते थे, ''शीशे का कसूर नहीं होता, हमारे चेहरे की किरणें शीशे के साथ टकराकर हमें अपना आप दिखाती हैं। हम हँसते हुए शीशे के आगे खड़े होंगे तो हम

अपने आपको हँसता हुआ देखेंगे अगर रोते हुए शीशे के आगे खड़े होंगे तो अपने आपको रोता हुआ देखेंगे। सन्त खुदा का शीशा होते है।'' हमारी जैसी भावना है वैसी ही किरणें टकराकर हमें नजर आती हैं। वह तो साफ है उसके गुरु ने उसे साफ किया हुआ है। वहाँ पर वह झलक साफ नजर आती है जिसका हम अंदाजा भी नहीं लगा सकते।

जिस खुशनसीब आत्मा को उस किरण को देखने का नजारा मिल जाता है उसमें से दुनिया की लोकलाज पर लगाकर उड़ जाती है। वह मस्त होकर उस नूरी किरण की तरफ अपना वक्त लगाता है। वह दुनिया के कर्मकांडें और रीति-रिवाजों को गुड्डियों का खेल समझता है, वह जानता है कि ये लोग भूले हुए हैं।

जिस तरह पपीहा पानी के लिए तड़पता है बेशक उसके पिरो-पिरो करने से नदी उसके पास नहीं आती लेकिन परमात्मा पपीहे की पुकार सुनकर इन्द्र देवता को हुक्म देता है कि इसकी प्यास बुझाओ।

प्यारेयो! जब हम दिन-रात उस रूहानी किरण को, गुरु की मन मोहनी सूरत को देखने के लिए तड़पते हैं तो परमात्मा हमारे प्यार की कद्र करता है और हमें उस नूरी शरीर में से किरणें फूट-फूटकर निकलती नजर आती हैं। हम जिसे याद करते हैं वह हमारे पास ही होता है। गुरु की मनमोहनी सूरत हमारे मन से और हमारे रिश्तेदारों से भी नजदीक होती है, वह दूर नहीं जो समुंद्रों या पहाड़ो के पिछली तरफ सोया हुआ है।

जिस शिष्य के अंदर नूरी स्वरूप अपना घर कर लेता है उसके लिए अगर गुरु चोला त्याग जाए तो उसे कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि उसके पास वह स्वरूप सदा ही है लेकिन गुरु के जाने के बाद उस गुरुमुख के दिल पर जो बीतती है उसे वही जानता है। वह गुरु को याद करके रोता है, उसके रोम-रोम से जल फूट-फूटकर निकलता है।

फूल की कद्र भँवरा जानता है। शिष्य को गुरु के मनमोहने स्वरूप की कद्र होती है। वह संगत के नुकसान को देखकर रोता है कि अगर गुरु धरती पर होता तो पता नहीं और कितनी आत्माएं उससे फायदा उठाती, मैं भी उसके चरणों में बैठकर रस मानता। जिस देह में उसे नूरी स्वरूप के दर्शन हुए हैं वह उसका मूल्य कैसे चुका सकता है, उसे कैसे भूल सकता है? वह उसे सपने में भी नहीं भूलता अगर रात को बड़बड़ाता है तो उसके मुँह से गुरु का ही नाम निकलता है।

वह रोता-चिल्लाता है कि तेरे रहते हुए मैं तेरा शिष्य था, मैं तुझसे प्यार प्राप्त करता था, अब मैं क्या करूँगा? आपको पता है समझदार बच्चा पिता के हुक्म में रहकर खुश होता है अगर ऐसे बच्चे के सिर से पिता का साया उठ जाए तो उसके साथ जो बीतती है उसका उसे ही पता होता है। आप गुरु अर्जुनदेव का शब्द पढ़ते हैं:

***दर्शन देख जीवां गुरु तेरा, पूर्ण करम होय प्रभ मेरा।***

गुरु अर्जुनदेव जी ने अपना जातिय तजुर्बा बयान किया है अगर संगत में सबकी इस तरह की हालत हो जाए तो जब गुरु चोला बदलता है कोई परेशान नहीं होता। सबको पता है कि गुरु हमारे पास है अगर हम परेशान होते हैं तो गुरु हमसे ज्यादा परेशान होगा।

मैं जब पहले टूर पर अमेरिका गया उस समय संगत के दिल में यह था कि हमारा गुरु मर गया है। मैंने कहा, ''जो लोग यह कहते हैं कि गुरु मर गया है उन्हें कोर्ट में खड़ा करके उनसे पूछा जाए कि उन्होंने जन्म-मरण वाला गुरु क्यों धारण किया? गुरु तो कभी नहीं मरता।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

***सतगुरु मेरा सदा सदा न आवे न जाए।***
***वो अविनाशी पुरुष है हर जेहा रहा समाए।।***

वह देह धारण करके आता है। जिन आत्माओं को परमात्मा के साथ जोड़ना होता है, जो काम उसके जिम्मे है वह उस काम को करके वापिस अपने देश चला जाता है। वह हुक्म में आता है और हुक्म में ही वापिस चला जाता है। गुरु अर्जुनदेव जी अपने शब्द में कहते हैं:

*मेरा मन लोचे गुरु दर्शन ताईं विलप करे चात्रिक की न्याईं।*
*त्रिखा न उतरे शान्त न आवे बिन देखे गुर दरबारे जिओ।।*

अमृतसर और लाहौर के बीच तीस मील का फासला है। लाहौर में आपकी बिरादरी में शादी थी। गुरु रामदास जी ने अर्जुनदेव जी को उस शादी में जाकर संगत की सेवा करने का हुक्म दिया और यह भी कह दिया कि जब बुलाया जाए तभी वापिस आना है। जब शादी के सब कार्यक्रम खत्म हो गए लेकिन आपको वापिस नहीं बुलाया गया तो अर्जुनदेव जी ने आपको चिट्ठी भेजकर अपनी हालत इस तरह बयान की:

*एक घड़ी न मिलते ता कलजुग होता, हुण कद मिलिऐ प्रिअ तुध भगवंता ।*
*मोहे रैंण न बिहावे नींद न आवे, बिन देखे गुरु दरबारे जिओ ।।*

शास्त्रों में कलयुग की उम्र चार लाख बत्तीस हजार वर्ष लिखी है लेकिन गुरु अर्जुनदेव जी महाराज अपने बिछोड़े की एक घड़ी को इतना लम्बा बयान करते हैं कि मुझे रात को नींद नहीं आती, रात बड़ी हो जाती है नींद उड़ जाती है, मुझे आपकी याद सताती है। आप मेरी आत्मा पर तरस करें मुझे वापिस अपने पास बुला लें। अर्जुनदेव जी रात को लाहौर में मकान की छत पर चढ़कर देखते थे शायद! अमृतसर की लाइटें ही दिखाई दे जाएं। तीस मील में लाईटों का क्या दिखना था क्योंकि रास्ते में ऊँची-नीची बहुत रूकावटें होती हैं। प्रेमी अपना दिल बहला लेता है कि मैं उस तरफ मुँह करके बैठूं जिस तरफ मेरा गुरु रहता है।

हम और भी प्रेमियों की हालत बयान करें सबके साथ जिंदगी में ऐसा बीतता है कि जब उन्हें अंदर मन को खींचने वाला सुंदर स्वरूप दिखाई दे

जाता है तो वे उस स्वरूप के साथ जुड़ जाते हैं। अर्जुनदेव जी अपने गुरु के प्यार में कहते हैं कि जिस देह में मुझे ऐसी मनमोहनी मूरत के दर्शन हुए हैं मैं उसे देख-देखकर तृप्त नहीं होता।

*मैं देख देख न रज्जां गुरु सतगुरु देहा ।*

जब इस गरीब आत्मा पर परमात्मा कृपाल की कृपा हुई अगर मैं आपके सामने कुछ बोलता तो आप डाँट देते थे क्योंकि सज्जन बहुत बेपरवाह होता है। माशूक के अंदर मगरूरी होती है और आशिक के अंदर मिन्नते होती हैं। आशिक मेहनत का चोर नहीं होता, उसे जहाँ भी दूर से माशूक की झलक मिल जाए वह कहता है:

*चिक झरोके पास खड़ोके, दूरों यार तकेंदा ।*
*ऐह वी जान गनीमत दिल विच, लख लख शुकर करेंदा ।।*

मैं आपके सामने कुछ कह तो नहीं सकता था, अपने अंदर ही कहता:

*दिल करदा ऐ सोहणया हर वेले तैनूं कोल खड़याके तकदी रवां ।*

सन्तों की कविता और उनकी लेखनियाँ उनका अपना ही अनुभव होता है। उनके अंदर अपने गुरु के लिए प्यार टपकता है। सन्त किसी किताब की मदद से नहीं बोलते। जब हजरत बाहु को यही नूरी स्वरूप मिला तो हजरत बाहु कह उठे:

*ऐह तन मेरा चश्मा होवे, मैं देख देख न रज्जा हू ।*
*लूं लूं दे मुढ़ लख लख चश्मा, ईक खोला ईक कज्जा हू ।*
*इतना डिट्ठयां सब्र न आवे, मैं होर किते वल भज्जा हू ।*
*मुर्शिद दा दीदार बाहू, मैंनूं लख करोड़ां हज्जा हू ।।*

गुरु अर्जुनदेव जी ने अपने दिल की पीड़ा बयान कि मेरा दिल करता है कि मैं अपने गुरु रामदास जी को आठो पहर पास बिठाकर देखता रहूँ। जब कभी दर्शन नहीं मिलता आँख झपकने में देर लगा देती है तो मैं पागलों की तरह हो जाता हूँ।

हिन्दुस्तान में कर्म-धर्म का अभी भी बहुत रिवाज है। आज से तीन-चार सौ साल पहले तो कर्म-धर्म बहुत ज्यादा था। लोग लम्बे-लम्बे व्रत रखते थे। कई लोग चन्द्रमा और सूरज का व्रत रखते हैं जबकि उन्हें यह नहीं पता कि चन्द्रमा और सूरज धरती से कितने ऊँचे हैं। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं:

***व्रत करे चन्द्रेणा से किते न लेखनी।***
***तिन जन्म सँवारया आपणा जिन अक्खी देखीन।।***

हम जितने भी कर्मकांड करते हैं ये किसी लेखे में नहीं। जिन्होंने सिमरन के द्वारा नौं द्वारे खाली करके अंदर जाकर उस नूरी स्वरूप के दर्शन कर लिए उनका दुनिया में आना-जाना खत्म हो जाता है, वे मालिक के पास से आते हैं और मालिक में जाकर ही समा जाते हैं।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं जिन पर गुरु की भक्ति का रंग चढ़ जाता है उनके बहाने खत्म हो जाते हैं। वे ये नहीं कहते कि मन नहीं टिकता, वे रात और दिन का हिसाब नहीं रखते।

प्रेमी परमात्मा के आगे अरदास करता है कि हे परमात्मा! मुझे तेरे देश में पहुँचने के लिए अगर पर मिल जाएं तो मैं उन परो को अपने शरीर पर लगाकर तेरे देश पहुँच जाऊँ और तुझसे मिल लूँ:

***खम्ब विकंदड़े जे लहां, घिना सामी तोल।***
***तन जुड़ाई आपने, लहां सो साजन टोल।।***

कितनों की गिनती बताएं, दुनिया में अनेकों ही अपने आपको पातशाह कहलवाकर चले गए। जब तक उनकी दुनियावी हुकूमत होती है तब तक लोग डरते हुए उनसे प्यार करते हैं। जब जीते जी उनकी हुकूमत छिन जाती है तब कोई उनको सलाम नहीं करता तो मरने के बाद किसने उनका नाम लेना है।

सन्त दिलों पर राज करते हैं। हम क्या हमारी आने वाली नस्ल भी उनके प्यार को उनकी याद को भुला नहीं सकती। गुरु अर्जुनदेव जी ने अपने गुरु को सच्चा पातशाह कहकर बयान किया है। वह सच्चा है उसके पास बैठकर ही हम शोभा प्राप्त करते हैं क्योंकि गुरु के पास बैठने से यम भी हमारी तरफ आँख उठाकर नहीं देख सकता। वह जितना सुंदर है उसमें जितना प्रकाश है वह हमारे अंदर भी उतना ही प्रकाश पैदा कर देता है, हमारी आत्मा को भी उतनी ही मनमोहनी बना देता है।

***सज्जण सच्चा पातशाह, सिर शाहां दे शाह।***
***जिस पास बैठयां सोहिए, सबना दा बैसाहो।।***

जिस तरह सूरज पुन्नी, पापी, हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, ब्राह्मण, अमेरिका या हिन्दुस्तान के रहने वाले सभी को अपनी गर्मी देता है इसी तरह गुरु भी सबको सहारा देता है। वह अपनी बख्शिश से किसी को भी खाली नहीं रखता। किसी को जवाब से ढ़ांढ़स देता है और किसी को अंदर से ढ़ांढ़स देता है। उसके पास पुन्नी आए चाहे पापी आए वह हर एक को गले लगाता है लेकिन वह यह कहता है, ''अब तक जो कर लिया, वो कर लिया लेकिन अब आगे के लिए कदम न बढ़ाना।'' वह सबको सहारा देने के लिए ही संसार में आता है।

गुरु अर्जुनदेव जी ने अपनी बानी में गुरु के दर्शनों के लिए, गुरु की मनमोहनी सूरत के लिए बहुत कुछ लिखा है। हम सारा दिन, सारी रात और सारी जिंदगी भी गुरु प्यार की बात करते जाएं ये खत्म होने में नहीं आती। अगर हम परमात्मा सावन-कृपाल को कुलमालिक, परमात्मा, अकाल पुरख कह लें तो कोई पाप नहीं। यह तो परमात्मा सावन-कृपाल की ही कृपा है जो हम आज उनकी याद में बैठे हैं, उनकी सिफत खत्म नहीं होती और न हो ही सकती है। ✻✻✻

तुलसी साहब की बानी
22 जून 1983

सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

# कर्मों का जाल

बगोटा–कोलंबिया

DVD No-511(2)

परमपिता कृपाल महान थे आपकी महिमा बयान नहीं की जा सकती, आप दोनों जहान के मालिक थे। जैसी–जैसी जिसकी माँग थी आपने उसे वह दिया, आपके देने के ढ़ंग न्यारे थे। आपने किसी को भी अपने दर से खाली नहीं भेजा। आप हमेशा कहते रहे, ''सवाल तो लेने वाले का है।'' जिसकी जो आशा थी आपने पूरी की।

मैं आपकी महिमा नहीं गा सकता अगर सारी धरती का कागज बनाएं, सारी वनस्पति की कलम बनाएं, सारे समुंद्रो की स्याही बनाएं फिर भी परमपिता कृपाल का यश लिखना चाहें तो नहीं लिख सकते। आप दयालु थे कुलमालिक थे, आप इंसान का जामा पहनकर आए। आपने हम बुरे, बुद्धिहीनों को अपने घर का भेद बताया; दया करके अपना प्यार बख्शा।

**हे हिरदे तोहिं आदि सुनाऊँ। जीव सुरति की संधि लखाऊँ।।**
**चौथे महल पुरुष इक स्वामी। जीव अंस वहि अन्तरजामी।।**
**उनकी अंस जीव जग आया। करता पाँच तत्त में लाया।।**

मैं हर रोज तुलसी साहब के रत्नसागर में से शब्द ले रहा हूँ। हिरदे तुलसी साहब का शिष्य था। हिरदे सवाल करता है, ''यह जीव(आत्मा) कहाँ से आया, यह किसकी अंश है?'' तुलसी साहब ने कहा, ''जीव न काल की अंश है न ब्रह्म की अंश है यह आत्मा सतपुरुष की अंश है। दुनिया को पता नहीं कि काल कौन है और दयाल कौन है? त्रिलोकी से आगे सच्चखंड चौथा लोक है। यह आत्मा वहाँ से उतरकर काल के जाल में फँस गई, आगे काल ने इसे पाँच तत्वों के शरीर का कोट पहना दिया। अब यह आत्मा अपने असल घर को भूल गई। काल न आत्मा को बना सकता है और न फनाह ही कर सकता है।'' अब हिरदे सवाल करता है, ''जिन आत्माओं को गुरु नहीं मिला, नाम नहीं मिला उन आत्माओं की आगे क्या हालत होती है?''

**करता ने काया रची, जुग जुग जग बिस्तार।**
**सार दियो बिसराय के, घर घर करत पुकार।।**

आप कहते हैं, ''चाहे सतयुग, त्रेता, द्वापर आज कलयुग है। हर युग में दुनिया को बनाने वाले करता ने काया बनाई और इसे अपने घर में आशा तृष्णा के वस फँसा लिया। बहुत सी काया रच दी जैसे पशु-पक्षी, साँप, कीड़े-मकौड़े और चौरासी लाख योनियाँ गिनें तो वक्त लगता है। हर योनि में यह जीव मारा-मारा लाचार, दुःखी हुआ फिरता है।''

**पिंड प्रधान बसे तन माहीं। करता ने काया उपजाई।।**
**बेद पुरान कर्म उपराजा। यासे करे जीव जग काजा।।**

अब आप कहते हैं, ''करता ने काया रचकर इसमें पिंड की प्रधान बुद्धि रख दी। ऋषि-मुनियों ने वेद रच दिए और वेदों में दुनिया में रहने-सहने, चलने-फिरने के कर्मकांड लिख दिए।''

**करता करम किया बिस्तारा। लख चौरासी रूप सँवारा।।**
**काल अपर्वल जाल पसारा। उन सब घेरि जीव को मारा।।**

तुलसी साहब कहते हैं, ''देख भई हिरदे! काल ने बहुत लम्बा-चौड़ा जाल बिछाया हुआ है, इस जाल को तोड़ना बहुत मुश्किल है। हर जीव इस जाल में फँसा हुआ है अगर कोई पाप से हटता है तो पुण्य की तरफ दौड़ता है चाहता है कि मुझे स्वर्ग मिल जाएं।''

सन्त आकर काल का जाल फाड़ते हैं तो जीव उनके खिलाफ हो जाते हैं क्योंकि इतना पुराना रीति-रिवाज छोड़ना बहुत मुश्किल है। हम दुनियादार लोग सोसाइटी में बंधे हैं। जिस तरह भेड़ों के बाड़े को आग लग जाती है कोई तरस खाकर भेड़ो को बाहर निकालता है लेकिन भेड़ें सोसाइटी में बंधी हुई आग में जाकर सड़ जाती हैं।

**कर्म कलंदर आप नचावे। बाजी लाय जीव भटकावे।।**
**कोइ बंधन से बाँधे भाई। ऐसे बन्ध अनेक लगाई।।**

आप कहते हैं, ''हम जो दु:ख-सुख भोग रहे हैं ये हमारे अपने ही किए हुए कर्म हैं। जिस तरह कलंदर बंदर को नचाता है उसी तरह ये कर्म हमें बंदर की तरह नचा रहे हैं। कभी दु:ख है, कभी सुख है, कभी गरीबी है, कभी अमीरी है, कभी बीमारी है और कभी तंदरूस्ती है। काल ने हर किसी के ऊपर बंधन लगा रखे हैं। किसी को विषय-विकारों का बंधन है, किसी को शराबों-कबाबों का बंधन है, किसी को पढ़-पढ़ाई का बंधन है और किसी को कौम-मजहब का बंधन है।''

**कोई दाँव नहिं मारग पावे। धरि धरि देही जन्म सिरावे।।**

आप कहते हैं, ''अगर हमें किसी भी युग में रास्ता मिला होता तो आज हम इस दुखी दुनिया में हाजिर न होते। हमने जब भी कहीं जन्म लिया उसे मुफ्त ही लुटाकर चले गए, हमें आज तक रास्ता नहीं मिला।''

**चौरासी से निकरि न पावे। बारबार वहि माहिं समावे।।**

आप कहते हैं, ''काल किसी को भी चौरासी से निकलने नहीं देता अगर हम नेक कर्म, दान-पुण्य, जप-तप करते हैं तो काल किसी हद तक हमें स्वर्ग वैकुंठ दे देता है, वहाँ भी कल्प पर्यन्त तक मुक्ति है। एक हजार युग का कल्प बनता है आखिर हमें फिर इस संसार में आना पड़ता है।''

**कर्म सारनी बुधि बसी, सूरति रही अधीन।।**
**आसा के बस में पड़ी, बासा बिपति मलीन।।**

आप कहते हैं, ''हमारी अच्छी या बुरी बुद्धि भी पिछले कर्मों के अनुसार ही बनती है अगर पीछे नेक कर्म किए हैं तो हमारी बुद्धि अच्छी है अगर हम पीछे पाप करके आए हैं तो बुद्धि पर वैसा ही असर पड़ता है।''

**कर्म अपरबल भारी भोगू। सब जग जार जबर यह रोगू।।**

आप कहते हैं, ''इसे बहुत भारी रोग लगा हुआ है जीव जो कर्म करके आता है वह कर्म इसे जरूर भोगने पड़ते हैं।''

***कर्म प्रधान विश्व रच राखा, जो जस कीन्ह सो तस फल चाखा।।***

**बिना कर्म कोइ काया नाहीं। जग बस रहा कर्म के माहीं।।**
**काया बिना कर्म नहिं होई। कर्म बिना काया नहिं सोई।।**

आप कहते हैं, ''कोई भी काया ऐसी नहीं जो बिना कर्मों के बनी हो। काया के बिना कर्म नहीं होता, इनका एक-दूसरे के साथ संबंध है। कर्म के बगैर काया नहीं बनती और काया के बगैर कोई कर्म नहीं हो सकता।''

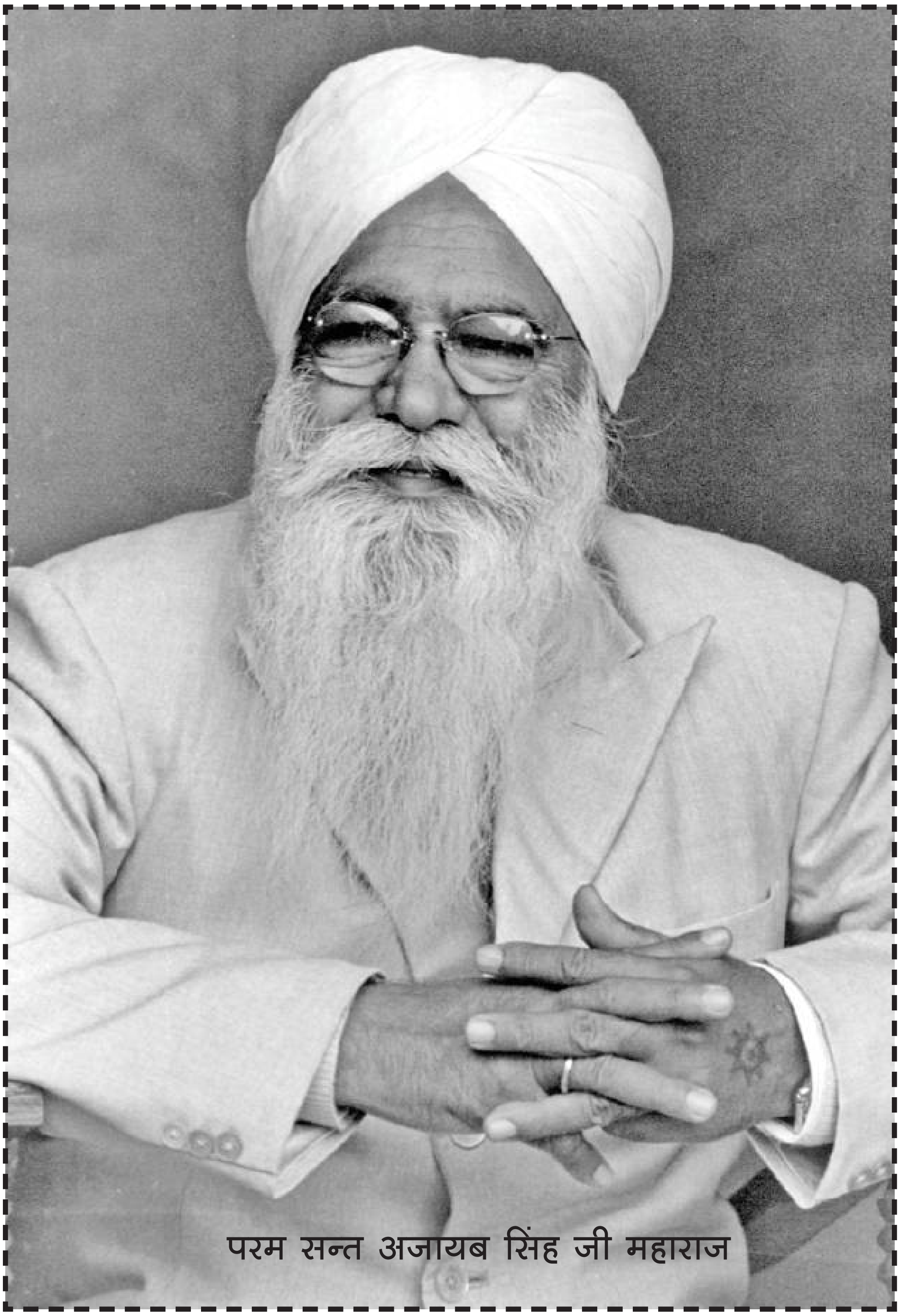

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

**यह अनादि से रचना भाई। जुगन जुगन ऐसे चलि आई।।**
**कर्म भूत सब जग को लागा। यासे बची नहीं कोई जागा।।**

कर्मों का भूत सबके ऊपर सवार है, सन्त ही इससे बचाते हैं।

**कीट पतंग संग सब केरे। तीन लोक अंडा सब घेरे।।**

आप कहते हैं, ''त्रिलोकी तक इंसान, कीड़े, पतंगे, सर्प, सब काल के घेरे में हैं और कर्मों का दंड भोग रहे हैं।''

**सात दीप नव खंड कहावे। चौदह लोक कर्म बस गावे।।**

इस संसार के सात द्वीप, नौ खंड और चौदह लोक हैं। इन सबके बीच कर्म प्रधान है जो जैसा कर्म करता है वह उसे भोगना पड़ता है।

***बिन किए लागे नहीं, किया न बिरथा जाए।***

धृतराष्ट्र कृष्ण भगवान का खास सेवक था। उसने कृष्ण भगवान से कहा, ''मुझे सौ जन्म का ज्ञान है। मैंने सौ जन्मों में ऐसा कोई कर्म नहीं किया जिस वजह से मैं अंधा हूँ।'' कृष्ण भगवान ने अपनी योग शक्ति से धृतराष्ट के सिर पर हाथ रखा और कहा, ''तू सौ जन्मों से पीछे जाकर देख कि तू क्या करके आया है?'' आखिर उसके एक सौ छठे जन्म का कर्म निकला क्योंकि **कर्मों का जाल** बहुत उलझा हुआ है, इस जाल से छूटना बहुत मुश्किल है।

**चन्द्र सूर अरू दस औतारा। यह सब बँधे कर्म की जारा।।**

आप कहते हैं, ''सूरज, चन्द्रमा, सितारे, सारे अवतार **कर्मों के जाल** में फँसे हुए हैं और अपने कर्मों का भुगतान कर रहे हैं।''

**अंड खंड ब्रह्मांड लों, लोक सकल जग जाल।**
**काल कर्म सिर ऊपरे, जुग जुग फिरत बेहाल।।**

**अब यह काल चरित्र लखाऊँ। अंदर प्रान बसे जेहि ठाँऊ।।**

तुलसी साहब हिरदे से कहते हैं, ''मैं तुझे काल के चरित्र बताता हूँ कि किस तरह काल जीव को आकर घेरता है। गुरु मिला नहीं, नाम मिला नहीं तो काल ने ही आना है; काल ने ही इसे लेकर जाना है।''

**काया मद्धे काल सतावे। जब वह प्रान लेन को आवे।।**

मौत खुद नहीं होती। हैजा हो जाए, तपेदिक हो जाए, बीमारी शरीर को नकारा कर देती है। जब आत्मा शरीर से सिमटती है तब बहुत कष्ट होता है।

**सिमटत भास स्वाँस उठि जावे। प्रानपती जम सिमटि समावे।।**
**भास अकास तत्त मे जाई। तत्त अकास अंड के माहीं।।**

जब मौत आती है पैर सुन्न हो जाते हैं और हमारा सारा शरीर सुन्न हो जाता है। जब आत्मा पैरों के तले से सिमटकर मूल चक्र में आती है उस समय यहाँ पृथ्वी है, जब ब्रह्म चक्र टूटता है तो पृथ्वी को पानी घोल लेता है पृथ्वी पानी में समा जाती है। जब नाभि चक्र टूटता है तो पानी को अग्नि सोख लेती है। जब हृदय में आती है वहाँ हवा का जोर है अग्नि को हवा उड़ाकर ले जाती है, यह शरीर की प्रलय है।

जब दुनिया की प्रलय आती है उस समय भी ऐसा ही होता है। पृथ्वी को पानी घोल लेता है पानी को अग्नि खुष्क कर देती है अग्नि को हवा उड़ाकर ले जाती है और हवा आकाश में जाकर समा जाती है। जैसे दुनिया की बड़ी प्रलय होती है इसी तरह शरीर की प्रलय होती है इसी तरह हमारी आत्मा तालूवे के ऊपर अंड में आ जाती है।

**जब यह कर्म कला उपजावे। बुद्धि सुरति को आन दबावे।।**

जब मौत आती है हमने जिंदगी में जो कर्म किए होते हैं उन कर्मों का अतर निकलकर बुद्धि पर पड़ता है, उसका संकल्प बनता है फिर संकल्प के मुताबिक ही आगे हमारा जन्म होता है:

***जहाँ आसा तहाँ वासा।***

**मैली बुद्धि सुरति के माहीं। वही समय में जाय समाई।।**

सारी जिंदगी भोग भोगे, विषय-विकार कमाए, बुरे कर्म किए उस समय बुद्धि कैसे अच्छी हो सकती है? मैली बुद्धि का असर आत्मा पर पड़ता है। मैंने कल मिसाल देकर समझाया था कि हम भजन-सिमरन की प्रैक्टिस क्यों करते हैं? एक कुम्हार राजा के महल में रेत डालने के लिए जा रहा था। वह गधियों को हाँकता हुआ कह रहा था, ''चल बीबी चल भैंणें।'' एक राही ने उस कुम्हार से पूछा कि तू ऐसा क्यों बोल रहा है? कुम्हार ने कहा, ''हम खुल्ला बोलने वाले लोग हैं, कई किस्म की बोलियाँ बोलते हैं। मैं सोच रहा हूँ कहीं राजा के महल में जाकर मेरे मुँह से कोई गन्दा लफ्ज न निकल जाए इसलिए मैं यह प्रैक्टिस कर रहा हूँ।''

इसलिए सन्त-महात्मा हमेशा उपदेश करते हैं कि अपनी जिंदगी को पवित्र रखें, ख्याल पवित्र रखें और विषय-विकारों से अपना मुँह मोड़ें ताकि अन्त समय में आपकी बुद्धि साफ हो, आत्मा के ऊपर इसका अच्छा असर हो और अन्त समय में भी आपका सिमरन चलता रहे।

महाराज सावन सिंह जी एक जज की मिसाल देकर समझाया करते थे कि उस जज ने सारी जिंदगी फैसले किए इसलिए अन्त समय में उसका वही ख्याल रहा। जब उसका अन्त समय आया तब एक तरफ साँस निकला और उसकी जुबान से निकला, 'डिग्री खारिज।'

**कर्म अनुसार बसे मन आसा। सुरति मन बुधि बंधन फाँसा।।**
**सुनत अवाज स्याम सठ गाँसा। घेर घुमरि लावे जहँ स्वाँसा।।**

आप कहते हैं, ''गुरु नहीं मिला, नाम नहीं मिला। अंदर काल आवाज देकर कहता है कि तू इधर आ जा। आत्मा संसारी दु:खों से दु:खी होती है शरीर को कोई बीमारी भी लगी होती है उस समय आत्मा घबराई होती है; जिधर से आवाज आती है यह उसी तरफ चली जाती है।''

**कर्म सारनी बुधि बसै, आसा बास निदान।**
**यह नव द्वारा पिंड में, निकसि जाय ज्यों प्रान।।**

**यह तो कर्म बुद्धि अनुसारा। अब सुनियों यह काल पसारा।।**
**अस्ट कँवल दल अंदर माहीं। वहाँ छिपि बैठा काल कसाई।।**

आप कहते हैं, ''हिरदे! मैंने पहले तुझे कर्मों के मुत्तलिक अच्छी तरह समझा दिया है। अब तुझे काल के पसारे के बारे में बताता हूँ कि काल किस तरह शरीर में छिपकर बैठा है और कहाँ जाकर आत्मा को सँभालता है।''

मैंने कल आपको बताया था कि अस्ट कमल में जाकर फैसला होता है कि यह किसकी आत्मा है? लेकिन तुलसी साहब जिस आत्मा का जिक्र कर रहे हैं उसे गुरु नहीं मिला, नाम नहीं मिला, वहाँ काल ही बैठा है; काल उसे आवाज देकर अपने पास बुलाता है।

**जब सब भास सिमटि करि आवे। जब सुरति पै बुधि पहुँचावे।।**
**कँवल द्वार पखड़ी को रोके। उलटी सुरति काल मुख सोखे।।**

आप कहते हैं, ''जब आत्मा शरीर से निकलकर ऊपर आती है, उस समय घबराई होती है। काल आवाज देता है आखिर आत्मा उस तरफ चली जाती है। काल कसाई है, वह इसे अपनी जाड़ों में लेकर चबा जाता है। यह जिसे सारी जिंदगी पूजता था वही इसे खा जाता है।''

**काल दाढ़ में आन चबानी। जब ढ़रके नैनक से पानी।।**
**लगे टकटकी दिखे न भाई। वाहि समय को करे सहाई।।**

जब आत्मा काल की दाढ़ में आ जाती है, आँखों से पानी निकलता है। घर के लोग पास ही बैठे होते हैं यह उस समय कुछ बोल नहीं सकता।

**जम के दूत घेर चहुँ फेरा। निकसे प्रान छोड़ करि डेरा।।**

अब आप कहते हैं, ''सारी उम्र बुरे काम किए, गुरु के पास गया नहीं, नाम लिया नहीं, गुरु के साथ प्यार किया नहीं। आखिरी समय जब प्राण निकलते हैं यम सिरहाने आकर बैठ जाते हैं, यम दिखाई देते हैं लेकिन घरवालों को कुछ बता नहीं सकता क्योंकि घरवालों को यम दिखाई नहीं देते, वे क्या मदद कर सकते हैं?''

**कर्म सारनी बुद्धि कहाई। जहँ भइ आस बास जेहिं माहीं।।**

**कर्म आस की बास में, जोनी जोनि समाय।**
**जो जैसी करनी करे, सो तैसे फल खाय।।**

हमें तुलसी साहब ने हर तरह से समझाया कि जिन आत्माओं को गुरु नहीं मिला, नाम नहीं मिला उनकी क्या हालत होती है? आपने अच्छी तरह बताया कि काल जीवों को खाता है। काल को कसाई कहकर बयान किया है। कसाई वह है जो जीवों को मारता है। इस कसाई से बचने के लिए सतगुरु के चरणों में जाना है, हमें गुरु ही बचाकर ले जा सकता है।

भाग सिंह विरक आश्रम में सेवा करने के लिए आता है। राजस्थान आने वाले बहुत सारे प्रेमी उसे जानते भी हैं। उसका पिता शराबी-कबाबी था, लड़ाई-झगड़े करता था। जब उसका अन्त समय आया तो वह रोकर कहने लगा, ''देखो भई! यमदूत मेरी कमर को जला रहे हैं गर्म करके लोहे के सरिये मार रहे हैं।''

भागसिंह बताया करता था कि जब उसके पिता ने शरीर छोड़ा तो उसके शरीर पर वैसे ही दाग पड़े हुए थे। उसकी माता एक अच्छी धर्मी नाम जपने वाली आत्मा थी। जब उसकी माता ने चोला छोड़ा तो उसने कहा, ''छिड़काव कर दें गुरु मुझे लेने के लिए आ गए हैं।'' हम ऐसे कई वाक्य आँखों से भी देख लेते हैं। ***

महाराज कृपाल सिंह जी के मुखारविंद से.....

# आपके जीवन श्वासों का लुटेरा-2

सावन आश्रम-दिल्ली

***कलु आया कलु आया, एक नाम बोओ नाम बोओ।***
***आन रूत नाहीं, नाहीं भरम भरम मत भूलो।।***

सन्त कहते हैं कि मुक्ति का सीधा रास्ता पिछले व वर्तमान कर्मों से नहीं और न ही मजहबी कर्मकांडो से है। मुक्ति का रास्ता केवल इन्द्रियों के घाट तक है। जब तक आत्मा का मिलाप परमात्मा के साथ नहीं हुआ, आत्मा नाम के रंग में नहीं रंगी तो इसे संसार में आना ही पड़ेगा। जो सच को देखते हैं वे एक ही चीज को अलग-अलग भाषाओं में बयान करते हैं।

गुरुबानी में लिखा है कि साधु की संगत का मिलना और नाम का पाना ही सतसंग है। जिसे नाम मिल गया वही दिल से नाम जपता है लेकिन नाम का खजाना उसी से मिल सकता है जिसके पास नाम है। जिस तरह एक शराबी दूसरे शराबी से मिलता है तो वे दोनों एक ही धुन पर नाचते हैं इसी तरह जब नाम का अमृत पीने वाले मिल जाते हैं तब उनकी आत्मा आनन्द महसूस करती है। जैसी संगत वैसी रंगत।

मौलाना रूमी ने कहा है, ''किसी पूर्ण महात्मा की संगत में बीस मिनट बिताने का सौभाग्य प्राप्त करना सौ साल परमात्मा की भक्ति करने से ज्यादा फायदा देगा।'' यह अनूठा रंग बनाया नहीं जा सकता, यह केवल इसके सीधे स्त्रोत से प्राप्त किया जा सकता है। यह रंग इंसान के अंदर पहले से ही मौजूद है लेकिन युगों-युगों की मैल से ढ़का हुआ है। यह केवल पूर्ण महात्मा की संगत में ही प्रकट हो सकता है। जिसकी सुरत उसके अपने बस में है और जो मस्ती से लबालब भरा हुआ है इसे आप नाम की दात कह सकते हैं। भजन करना बहुत जरूरी है, भजन करने से सारी चीजें अपने आप ही आ जाएंगी। ऐसे लोग भी हैं जो भजन के चोर हैं:

*जो जो चोर भजन के प्राणी, से से दुख सहे।*
*आलस नींद सतावे उनको, नित नित भ्रम गहे।*
*काम क्रोध के धक्के खावे, लोभ नदी में डूब मरे।।*

मानव इंसानी जामें में भटक रहा है यह परमात्मा के गुण कैसे गाए? विषयों की मार बुरी है काम और क्रोध इसे नित प्रताड़ित कर रहे हैं। गुरु अमरदास जी कहते हैं:

*सौ स्याणया इक्को मत, मूर्खां आपो आपणी।*

मन अशांति से नौं द्वारों में भटक रहा है। बेचारी आत्मा कभी काम में गिर जाती है कभी क्रोध में फैल जाती है। परमात्मा के पास पहुँचने के लिए हमें किसी जागृत पुरुष की संगत करनी पड़ेगी। हम किसी जागृत पुरुष की संगत में जाकर ही परमात्मा को याद कर सकते हैं। वह हमें सिखाता है कि हमने जीवन के हर दौर में काम करते हुए, चलते–फिरते, उठते–बैठते, खाते–पीते परमात्मा को याद रखना है।

ऐ मित्रों! विषयों के जाल फीके हैं इन्हें छोड़कर नाम का अमृत पिएं। इन्द्रियों की वजह से समस्त संसार विषयों में बहा जा रहा है अगर एक ही इन्द्री प्रबल हो जाए तो कितना नुकसान कर सकती है? मिसाल के तौर पर पतंगे में देखने की इन्द्री इतनी प्रबल होती है कि वह आँखों की रोशनी के प्रति अपने आपको जलाकर मार लेता है। मछलियाँ आजादी से समुंद्रों और नदियों में तैरती हैं उनकी जुबान इतनी तेज है कि वे किसी भी छोटी–मोटी चीज के झाँसे में आकर फँस जाती है और अपना जीवन खो देती हैं। भँवरे की हालत देखें! उसकी सूँघने की इन्द्री उसे एक फूल से दूसरे फूल तक खींचे रखती है और वह खिले हुए फूल द्वारा पकड़ लिया जाता है जो उसे निगल जाता है।

हमने देखने, सुनने और स्वाद की बात की है। मृग एक ऐसा जानवर है जो इतनी तेज रफ्तार से चलता है कि उसे पकड़ना मुश्किल है अगर वह पीछे की तरफ छलाँग लगाए तो उसकी छलाँग तीस फुट से चालीस

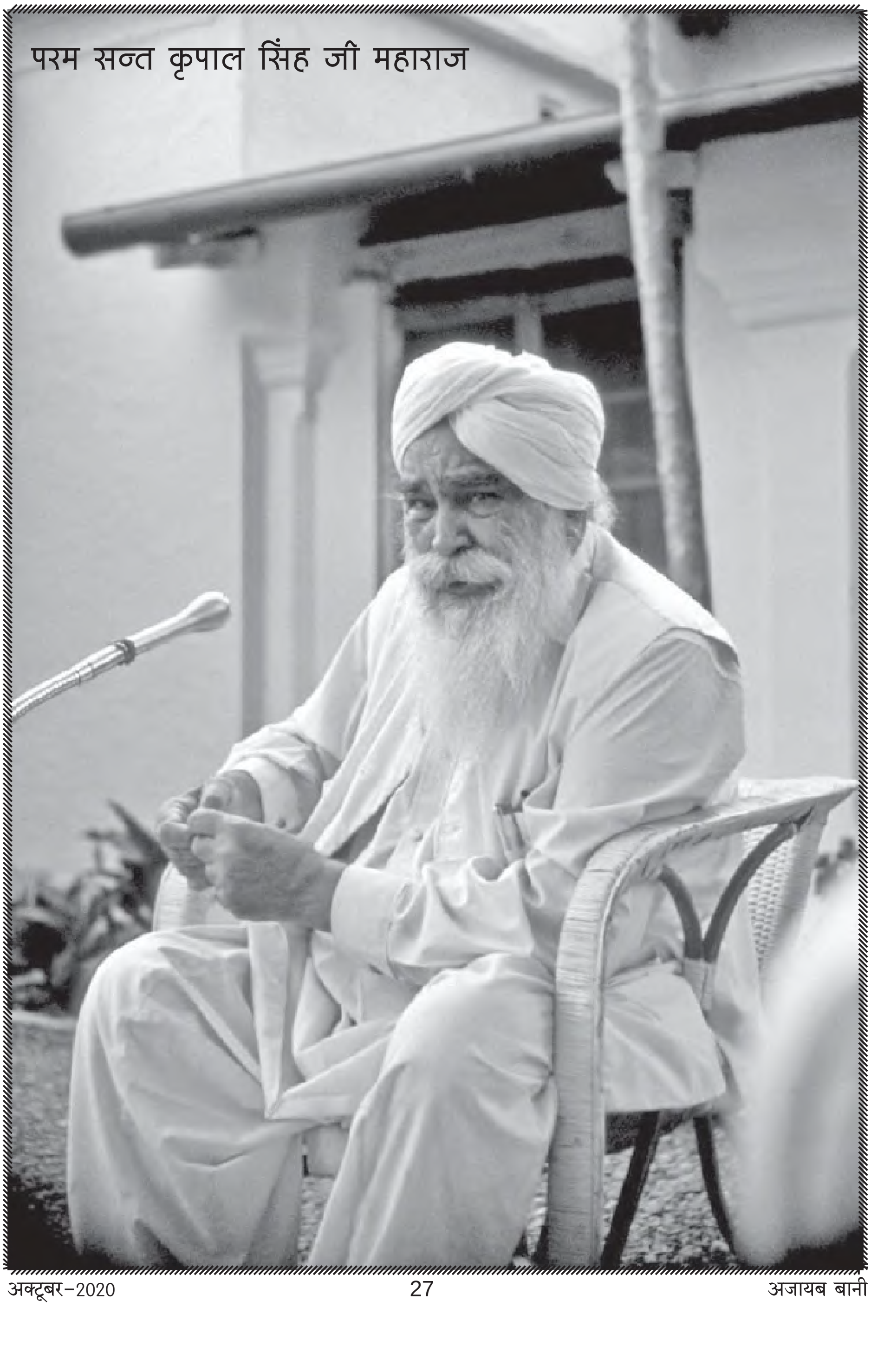

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज

फुट की मापी जा सकती है। उसकी कमजोरी सुनने की इन्द्री है अगर किसी तरफ से खास किस्म की ताल की आवाज या ढ़ोल की आवाज सुनाई दे तो मृग सब कुछ भूलकर ढ़ोलक पर जाकर अपना सिर रख देता है फिर उसकी सारी जिंदगी कैद में बीतती है।

अब आप हाथी की तरफ देखें! हाथी एक शक्तिशाली जानवर है उसे देखकर इंसान को डर लगता है। समागम ऋतु के दौरान हाथी के अंदर हथनी को छूने की इच्छा इतनी प्रबल हो जाती है कि वह कामवासना में बेकाबू हो जाता है। इस हालत में हाथी बड़े–बड़े पेड़ों को भी जड़ से उखाड़ फैंकता है।

इंसान अपनी युक्ति से हाथी को पकड़ने के लिए एक बड़ा गड्ढा खोदता है उस गड्ढे को टहनियों और घास से ढ़क देता है। हाथी को आकर्षित करने के लिए पास में एक कागज की हथनी खड़ी कर दी जाती है। हाथी, हथनी की ओर दौड़ता है और गहरे गड्ढे में में गिर जाता है, बहुत दिनों तक भूखा रहने के बाद वह बहुत कमजोर हो जाता है और सारी जिंदगी इंसान की गुलामी करता है। हाथी की उम्र सौ साल भी हो सकती है। ये उन जीवों की हालत का नमूना है जो एक इन्द्री के गुलाम हैं।

इंसान में पाँच इन्द्रियाँ हैं उसका क्या हाल होगा? हमने इस मुश्किल काम के बारे में सोचना है क्योंकि इन पाँच इन्द्रियों को काबू में करना बहुत मुश्किल है। हम सिर्फ सतगुरु की दया से ही कुछ समय के लिए इन ताकतवर इन्द्रियों पर काबू पा सकते हैं।

***खीचें सुरत गुरु बलवान।***

परमात्मा सदा हमारे अंदर मौजूद रहता है, जिसका वर्णन नाम के रूप में किया गया है:

***नाम जपत कोटि सूरज उजियारा।***

हमारे अंदर ज्योत है परमात्मा का सदाबहार गीत हमारे अंदर बज रहा है। गुरु हमें उस ज्योत और आवाज के साथ जोड़ता है, यह गुरु की महानता है; गुरु में परमात्मा है। गुरु जब हमें यह कीमती चीज देते हैं तो इसे बढ़ाना जरूरी है और जब इसका स्वाद बढ़ेगा तो बाकी के छोटे–मोटे स्वाद धुंधले पड़ जाएंगे।

जप–तप, पूजा–पाठ, दान और तीर्थ पर जाने से परमात्मा नहीं मिलता। आप इन्द्रियों को काबू करके ही परमात्मा से मिल सकते हैं। आप जब किसी पूर्ण पुरुष की संगत में बैठेंगे तो आप परमात्मा को पा लेंगे। सन्तों की संगत बड़े भाग्य से मिलती है। सन्तों की संगत में मन भटकता नहीं और कुछ समय के लिए स्थिर हो जाता है।

सतगुरु क्या है? वह भी इंसानों की तरह पैदा हुआ है, उसने भी इंसानी जामा धारण किया हुआ है। हम रोजाना उसे अपनी तरह खाते–पीते और दुनिया के काम करते हुए देखते हैं।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''जो अपने नौं द्वार – दो आँखों के दो नाक के दो कान के सुराख एक मुँह और नीचे की दो इन्द्रियों के सुराखों को पार करके अपनी सुरत को वहाँ से सिमटाकर आँखों के बीच दसवें द्वार पर ले आता है वही जान सकता है कि सतगुरु क्या है।''

हम कहाँ हैं? जिस इंसान ने अपना पूरा जीवन इन्द्रियों के घाट पर जिया है जिसकी धार्मिक क्रियाएं भी उसी स्तर की हैं उस इंसान से ऊपर उठने के ज्ञान की उम्मीद नहीं की जा सकती। उसे अच्छे कर्मों का फल अवश्य मिलेगा लेकिन वह बार–बार इस रचना में आएगा क्योंकि वह अपने आपको कर्ता समझता है। जैसा कि कृष्ण भगवान ने अच्छे और बुरे कर्मों के बारे में बताते हुए अच्छे कर्मों को सोने की बेड़ियाँ और बुरे कर्मों को लोहे की बेड़ियाँ कहा है।

मुक्ति केवल नाम के जरिए ही आती है। रामायण में इसे गली में दीपक जलाने के तुल्य कहा है कि उसकी रोशनी अंदर और बाहर दोनों तरफ जाती है। हमारे अंतरी और बाहरी जीवन पर नाम जपने का प्रभाव दर्शाता है। सिमरन दोहराना पहला कदम है। जिसका नाम जपा जा रहा है उसका शिष्य के सामने प्रकट होना और बात है अगर आपने गुरु से पूर्ण प्रेम नहीं किया तो आप वाक्य ही नाम के करीब नहीं हैं।

घट–घट में बसने वाला परमात्मा जानता है कि उसके कौन से बच्चे उससे मिलने के लिए तड़प रहे हैं वह जहाँ प्रकट है, वह उन बच्चों को अपने चरणों में लाने के लिए उपयुक्त स्थिति बना देता है। सच्चे गुरु का मिलना खास सौभाग्य है लेकिन जो उससे मिले हैं वे पूर्ण रूप से उससे प्यार नहीं करते बाहरी दिखावे के लिए उसके पैर छूते हैं और गुण गाते हैं। बहुत कम ही गुरु की आज्ञा का पालन करते हैं।

सभी सन्त अपने शिष्यों को सिमरन और भजन करने के लिए कहते हैं। हुजूर सावन सिंह जी महाराज कहा करते थे, ''आप लोग अपनी कमाई का दसवंद देते हैं लेकिन आपको अपने समय का दसवंद भी देना चाहिए।'' दिन का दसवाँ हिस्सा ढ़ाई घंटे होते हैं। कुछ लोग भजन में केवल पाँच मिनट बैठते हैं कुछ लोग आधे घंटे के लिए बैठते हैं और बहुत से ऐसे भी हैं जो बिल्कुल भी भजन में नहीं बैठते। कुछ ऐसे भी हैं कि उन्हें जब भी मौका मिलता है वे भजन के लिए बैठ जाते हैं।

आपको नामदान के साथ जोड़ दिया गया है अगर इसे बढ़ाया नहीं गया तो सुरत बाहर ही रहेगी अंदर नहीं जाएगी चाहे आप कई घंटे बैठे रहें, अंदर कुछ भी दिखाई नहीं देगा। लोग समझेंगे कि यह बड़ा श्रद्धालु है। यह जो चेहरा दुनिया को दिखाता है वह सफेद है लेकिन परमात्मा के दरबार में वह चेहरा काला है।

भाईयो उठो! यह असलियत को समझने का वक्त है। सन्त संसार में आकर बाँह खड़ी करके होका देते हैं, ''प्यारेयो! भजन करो क्योंकि भजन के बिना आप मुक्त नहीं हो सकते।'' गुरु से शिक्षा लें क्योंकि भक्ति के बिना बहुत ही चतुर डूब गए। इस मंडल में पढ़ाई–लिखाई व ऊँची डिग्रियाँ किसी काम की नहीं।

एक दफा एक पढ़े–लिखे आदमी ने नदी किनारे पहुँचकर नाविक को उस पार ले जाने के लिए कहा। नाविक मान गया और वे नदी पार कर रहे थे। पढ़े–लिखे आदमी ने नाविक से पूछा, ''क्या तुमने कोई शिक्षा प्राप्त की है?'' नाविक ने उत्तर दिया, ''मैंने कोई शिक्षा प्राप्त नहीं की है?''पढ़े–लिखे आदमी ने कहा, ''प्यारे! तुमने आधा जीवन बर्बाद कर लिया है।''आधे रास्ते में नाव में छेद हो गया और नाव डूबने लगी। नाविक ने उस पढ़े–लिखे आदमी से पूछा, ''क्या तुमने तैरना सीखा है?'' उसने कहा, ''मैंने तैरना नहीं सीखा।'' नाविक ने कहा, ''यहाँ तुम्हारी सारी पढ़ाई–लिखाई बर्बाद हो गई।'' नाविक तैरकर किनारे पर पहुँच गया।

अब मैं यह सलाह नहीं दे रहा कि आप पढ़ाई–लिखाई बिल्कुल न करें, शिक्षा अपनी जगह अच्छी है। अगर आत्मा ने अपनी इच्छा के अनुसार शरीर छोड़ना नहीं सीखा और नाम के रंग में भीगकर कोई नशा प्राप्त नहीं किया तो चाहे आप कितने ही भाषण सुन लें कितने ही कर्म कर लें आपको आध्यात्मिक मार्ग में कोई कामयाबी नहीं मिलेगी। आप इस हकीकत को याद रखें क्योंकि यह स्पष्ट और आसान है। सभी सन्त सच को बहुत ही आसान तरीके से समझाते हैं:

***सच्चा सतगुरु कहे, अपना भजन बनाओ।***

अपने कान खोलें और सुनें जिसने अपना भजन बना लिया उसने सब कुछ बना लिया। जिसका भजन नहीं बना वह जीवन की उपलब्धियों का कोई भी आनन्द नहीं ले सकता। भजन करने की महत्त्वता पर इतना

जोर देने का एक महान मकसद है अगर आपका रोजाना का जीवन आपके काबू में नहीं है तो उसे काबू में लाने की कोशिश करें।

जो ईश्वरीय योजना का जागृत सहकर्मी बन जाता है उसका जीवन सदाचारी बन जाता है। वह जो कुछ भी करता है वह सदाचार से भरपूर होता है। आपकी नाकामयाबी के पीछे यह कारण है कि आपने अपने गुरु को सचमुच प्यार नहीं किया बल्कि कई तरह से केवल दिखावा किया है। ऐसा नहीं कि किसी ने अपने मन को गुरु पर कुर्बान न किया हो, मन के दिए बिना कोई कामयाबी नहीं है:

***मन बेचे सतगुरु के पास तन संतन का धन संतन का मन संतन का ।***

आप सतगुरु को अपना मन दे दें। जो ऐसा कर सकते हैं उन्हें सबसे ऊँची दात मिलेगी। दात को प्राप्त करने वाला हिन्दु, मुसलमान, सिक्ख या ईसाई कोई भी हो सकता है क्योंकि बाहरी धर्म केवल लेबल हैं। हम सब इंसान हैं, इंसान एक देहधारी आत्मा है। हम सभी परमात्मा के बच्चे हैं लेकिन दुर्भाग्यवश भुलावे में जा रहे हैं। जब हम गुरु के पास जाते हैं तो गुरु हमें सिखाते हैं:

***बिसर गई सब तात पराई जब ते साध संगत मैं पाई ।***
***ना को वैरी ना ही बेगाना सगल संग हमको बन आई ।।***

बदलाव अंदर से आता है। हम इंसान हैं लेकिन उससे पहले हम इस शरीर के अंदर रहने वाली आत्मा हैं फिर इतना मतभेद क्यों है? जब लोगों को सही समझ आ जाएगी तब धरती पर शान्ति राज्य करेगी। नाम सब बीमारियों की दवा है नाम हमेशा था और हमेशा रहेगा। जब इंसान यह भूल जाता है कि परमात्मा मेरे अंदर है तो सारे दु:ख और तकलीफें आनी शुरु हो जाती हैं। आत्मा को परमात्मा के साथ जोड़ना और उस सच को जानना सभी तकलीफों की असरकारक दवा है।

***सरब रोग का औखद नाम। ******

30 सितम्बर 1978

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले

# प्यार और तड़प के साथ गाएं

राजस्थान

***एक प्रेमी:*** *क्या आप हमें भजन गाने के पीछे की शक्ति और चार्जिंग के बारे में कुछ बताएंगे?*

***बाबा जी:*** गुरुनानक साहब भजन गाने वालें प्रेमियों को भजन मंडली कहते थे, अब हम उसे सतसंग कहते हैं। जब हम एक साथ बैठते हैं तो हर कोई जानता है कि हम परमात्मा की याद में बैठे हैं, उस समय परमात्मा के बारे में ही सोचा जाता है। गुरु नानक साहब कहते हैं, ''आप जब भी सतसंग में एक साथ बैठते हैं तो आपको कोई ऐसा भजन गाना चाहिए जिसमें गुरु के लिए तड़प और प्यार हो।''

हमें भजनों को तड़प और प्यार के साथ गाना चाहिए। भजन आपको ऐसा नशा और शान्ति देगा जिससे हमारे अंदर जो काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की अग्नि जल रही है वह शान्त होने लगेगी। प्रेम से भजन गाने से हमें वह नशा मिलता है जो हमारे दु:खों को दूर करता है।

हम जिन भजनों को यहाँ गाते हैं वे भजन हमारे महान गुरुओं के मुँह से निकले हुए हैं, वे भजन उनकी तड़प दर्शाते हैं। जब हम उन भजनों को गाते हैं तो हमें भी अपने अंदर उस तड़प को पैदा करना चाहिए। ***

# धन्य अजायब

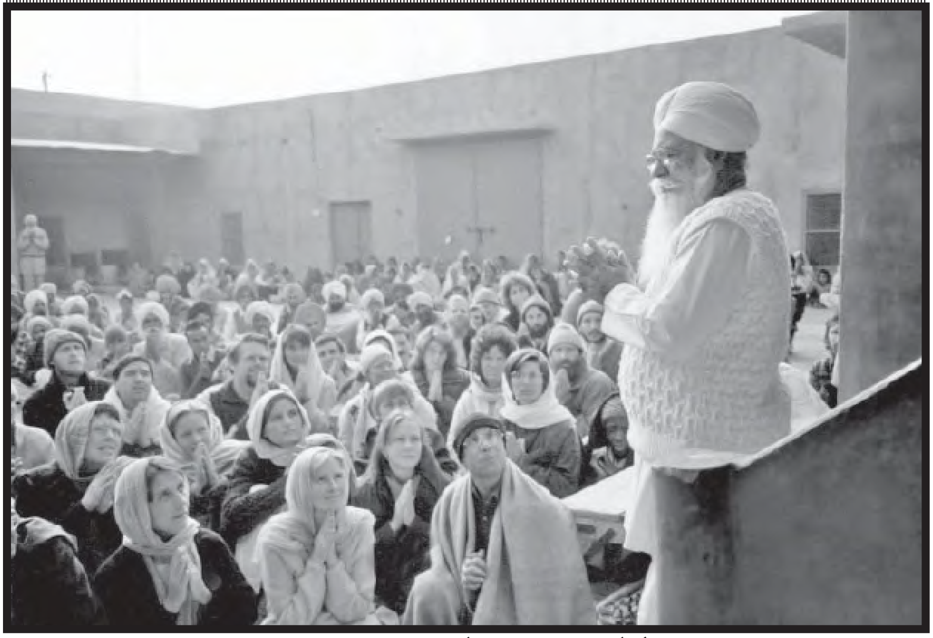

***कुदरत करके वसया सोये***
***वक्त विचारे सो बन्दा होये***

समय के अनुसार कुछ चीजें बदलनी पड़ती है इसी तरह अजायब बानी मासिक पत्रिका दिसम्बर 2020 के बाद प्रेस प्रिंटिंग नहीं हो पाएगी अत: अब आपको यह पत्रिका अपने फोन के whatsapp पर प्राप्त करनी होगी। आप कृपया हमें अपने whatsapp no. की जानकारी 99 50 55 66 71 पर दें। ताकि आपको Ajaibbani Hindi Magazine के ग्रुप में शामिल कर लिया जाए।

यह मासिक पत्रिका अजायब बानी व सन्त बानी आश्रम 16 पी. एस. रायसिंह नगर– 335039 जिला – श्रीगंगानगर (राजस्थान) द्वारा प्रकाशित अन्य पुस्तकें भी आप www.ajaibbani.org पर प्राप्त कर सकते हैं। अन्य जानकारी के लिए कृपया 80 79 08 46 01 व 96 67 23 33 04 पर संपर्क करें।